ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन कविता: एक अध्ययन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे
सह संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार

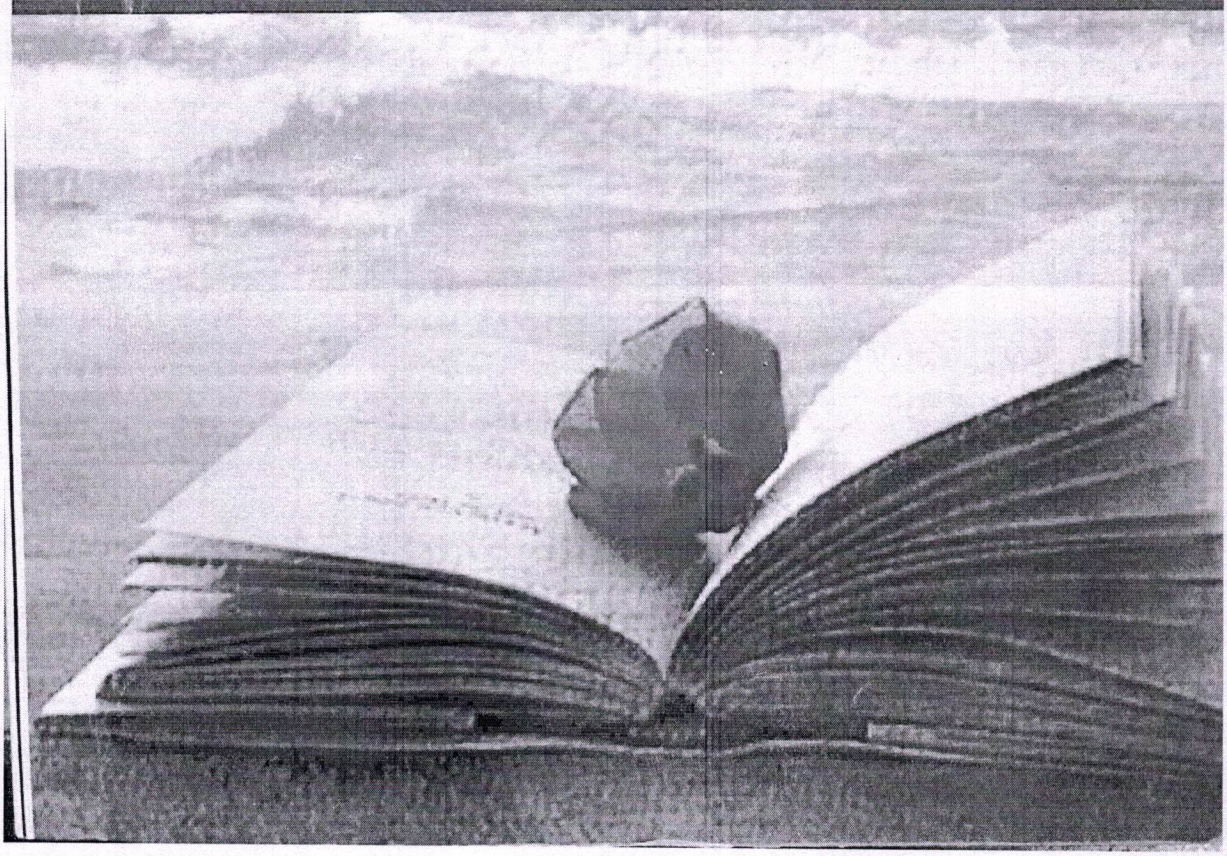

Scanned by CamScanner

२१. समकालिन कविता में लोकचेतना
प्रा. डॉ. सौ. कठारे मंगला श्रीराम
१३७-१४३

२२. 'मित्रो मरजानी' में चित्रित नारी जीवन
प्रा. डॉ. प्रवीण कांबळे
१४४-१४७

२३. समकालीन हिन्दी कहानी में सामाजिक चेतना
प्रा. आर.एम.खराडे
१४८-१५३

२४. समकालीन कविताओं में विद्रोही स्वर
प्रा. डॉ कलशेटटी एम. के.
१५४-१५८

२५. समकालिन कविता में दलित चेतना के विविध आयाम
प्रा. बालिका रामराव कांबळे
१५९-१६३

२६. हिंदी गजल में सामाजिक बोध
डॉ. मारोती यमुलवाड
१६४-१६८

२७. समकालीन कवि : लीलाधर जगुडी
स.प्रा. मुजावर एस.टी.
१६९-१७३

२८. सुशिला टाकभौरे की कविताओं में अभिव्यक्त नारी
प्रा. भेंडेकर एन.एस.
१७४-१७८

Scanned by CamScanner

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 174-178
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

सुशिला टाकभौरे की कविताओं में अभिव्यक्त नारी

प्रा. भेंडेकर एन.एस.

प्रकृतित: स्त्री–पुरूष सृष्टी संचालन के प्रमुख आधार है। एक के अभाव में दुसरा अधुरा है। शारीरीक संरचना के आधार पर पुरूष की तुलना में स्त्री कोमल, सुकुमार है। जिसके सौंदर्य का वर्णन अनेक रचनाकारों ने अपने साहित्य में किया है। एक ओर तो हम उसे सुकोमल कहते हैं किन्तु वहीं दुसरी ओर उसपर अत्याचार करने से बाज भी नहीं आते। न जाने कितनी सदिया बीत चुकी है हम उसकी पीड़ा को देखते आये है, पर उसे बाहर निकालेने के प्रयास न के बराबर है। साहित्यिक सभा–गोष्ठियों में हम चर्चा जरूर करते है कि, नारी भी समानता की अधिकारीनी है, उसे भी अधिकार मिलने चाहिए किन्तु समाज की भयावह वास्तविकता यह है कि, आज भी नारीयों पर अलग–अलग प्रकार से अन्याय–अत्याचार होते रहते है। वह जितनी बार पीड़ा की फसले काँटती रहती है, हम उतनी ही उगाते चले जाते है। जिसे हम एक ओर देवी, माता, भगीनी आदि रूपों में आदरभाव के साथ देखते है दूसरी ओर उतने ही अत्याचार... दिल्ली के निर्भया कांड जैसी कितनी ही घटनायें समाज में आज भी घटित हो रही है। जब तक स्त्री अपने आप को पूर्ण

प्रा. भेंडेकर एन.एस.: कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड, तह. गंगाखेड, जिला. परभणी

Scanned by CamScanner

रूप से निर्भय महसुस नहीं करती तब तक समाज में स्त्री–पुरूष समानता है, ऐसा कहना भी अनुचित लगता है।

एक ओर साहित्यिक दृष्टि से देखा जाए तो अनेक साहित्यकारों ने नारी का मनोहारी चित्रण अपने साहित्य में किया है। मैथिलिशरण गुप्त जी लिखते हैं, 'है बिखेर देती वसुंधरा, मोती, सबके सोने पर, रवि बटोर लेता है उनको, सदा सवेरा होने पर।' तो सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने 'अमल–कोमल–तनु तरूणी' आदी जैसे अनेक रचनाकारों ने नारी की सुंदरता के अनेक मनोहारी दृश्य अपने साहित्य में चित्रित किये है। दुसरी ओर सदियों से भारतीय समाज में पुरूष सत्ताक व्यवस्था अपने प्रबल रूप में स्थित है। इस व्यवस्था के चलते इस समाज व्यवस्था में स्त्री को दोयम स्थान दिया गया है। जिसके चलते स्त्री पर पारीवारीक, सामाजीक, धार्मिक रूप से अनेक पाबंदिया लगाई गयी। जिस कारण स्त्री का जीवन एक कटघरे में कैद होकर रह गया। रामायण काल से देखा जाये तो एक धोबी द्वारा लगाये आरोप के कारण 'सीता' को धरती में दफन होने के लिये विवश होना पड़ा, देवि 'अनुसया' का शील हरण करने का प्रयास किया गया, तो कई बार जलती चिता में कुदने को विवश किया गया। एक तरह से देखा जाये तो विभिन्न सामाजिक मान्यताओं के चलते स्त्री का जीवन 'पिंजरे में कैद बुलबुल' की तरह घर–परिवार तक सीमित होकर रह गया।

वर्तमान समय में नारी विर्मश को विविध आयामों की दृष्टि से देखा गया। नारी की आजादी को लेकर अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा आवाज लगाने के प्रयास किये। कल और आज की स्थिति को देखा जाये तो यकिनन इन स्थितियों में जमी–आसमाँ का अंतर दिखाई देता है। सुशिला टाकभौरे जी ने एक स्थान पर लिखा है–

ओ शबरी के राम
आँखे चुराकर
संवेदना दिखाना बंद करो
तुम्ही ने तो सीता को
धरती में समा जाने को मजबूर किया था
तब से विश्वास, भक्ती और प्रेम से बंधी सीता

Scanned by CamScanner

बार-बार धरती में दफनायी जाती रही है

यह स्थिति वर्तमान समय तक पायी जाती है किन्तु आज की जानकी सब जान गयी है, वह आज धरती में नहीं आकाश में विचरना चाहती है। पुरातन दासता के बंधनों से आजाद आज की जानकी के संदर्भ में वे कहती है-

आज जानकी सब जान गयी है,

अब वह धरती में नही

आकाश में विचरना चाहती है,

बिजली-सी चमक कर

सन्देश देना चाहती है-

वर्तमान में नारी विर्मश एक नये आयाम पर पहुँचा गया है। पुरातन समय की भाँती उनपर हुये अन्याय, अत्याचारों के सुर आलापने के स्थान पर आज की नारी का कृतत्व किस प्रकार निखर गया है, वह आसमाँ की बुलंदियों को किस प्रकार छुना चाहती है। पुरूष के कांधे से कांधा मिलाकर वह भी समाज तथा राष्ट्र विकास में अपना सहयोग देना चाहती है। घर-परिवार के दायरे से बाहर निकल वह अपने आप को स्थापित करना चाहती है। दासता की पुरातन जंजीरों को तोड़ वह आजाद पंछी की तरह किस प्रकार से विचरन करना चाहती है आदि नये आयामों को लेकर उसके विकास की दृष्टि से विचार-मंथन होना जरूरी है। उसे नये-नये अवसर प्रदान कर प्रेरित करने की आवश्यकता है। हम अपने दकियानुसी संस्कारों तथा विचारों को छोड़ उसके साहस और दृढ इच्छा शक्ति को पुरूषी अहंकार से परे जा कर यकीनन सराहना आवश्यक है। क्योंकि आज की नारी चुप बैठने वालों में से नही, बल्कि वह डटकर सामना करने को तत्पर है। वह इस व्यवस्था से पुछती है कि,

तुम डरते हो

अपनी क्रेज अपनी इमेज खराब हो जाने से

और मैं हूँ तत्पर

हरिश्चंद्र की पत्नी की तरह

अपनी आधी साडी फाड़ कर

Scanned by CamScanner

दे देने के लिए।

आज की नारी इस व्यवस्था से यह सवाल करती है कि, मेरे काम करने से अगर तुम्हारी इज्जत, शौहरत चली जाती है तो तुम्हें ऐतराज होता है। लेकिन समय आने पर तुम्हारे बचाव के लिए जब मैं अपना सर्वस्व दाँव पर लगाने से मुझे संकोच नहीं होता। तब तुम्हारी क्रेज और इमेज खराब नहीं होती? मैं तत्पर हूँ सदा अपने आप को स्थापित करने को। इससे तुम्हारे अहं को ठेंस पहुँचती है, क्योंकि तुम हर को सिर्फ अपनी नजर से देखते हो किंतु,

अब

आने वाली पिढ़ियों को

बचाना होगा

रास्ता देना होगा–

आगे बढ़कर

घर की चौखट के बाहर निकलना होगा!

इस व्यवस्था से वह अह आवहान करती है कि, अब और नही, जो दासता के कड़े बंधन अब तक थे, गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर अब वह स्वयं घर से बाहर निकलने को तत्पर है। क्यों कि वह जनती है कि अगर वह घर की चौखट को लांघ कर बाहर नहीं निकली तो न जाने कितनी पिढ़ियाँ वैसी ही बीत जायेंगी जैसे की पहले थी। पर अब और नहीं अब वह अपने अस्तित्व को निखारना चाहती है, अपने कृतत्व को सिद्ध करना चाहती है। इसिलिये तो वह कहती है–

स्वयं को पहचानों

चक्की में पिसते अन्न की तरह नहीं

उगते अंकुर की तरह जियो

धरती और आकाश सबका है

आज की नारी दबकर रहने वालों में से नही। जो घर परीवार की चक्की में पिसती गयी थी। वह तो आज चौखट के बाहर आ कर उन सभी नारीयों से यह अव्हान करती है की,

Scanned by CamScanner

सुविधाओं से समझौते कर के
कभी न अपना सर झुकओं
अपना ही हक माँगो
नयी पहचान बनाओं
धरती पर पग रखने से पहले
अपनी धरती बनाओ।

सारत: उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते है कि, सुशिला टाकभौरे जी की रचनाओं में नारी के पारंपारिक रूप नही वरन् आधुनिक रूप की अभिव्यक्ति विविध रूपों में हुयी है। उनकी कविताओं में अभिव्यक्त नारी सशक्त है, वह हर प्रकार के संघर्ष के लिए हमेशा तत्पर है। उसकी स्थिति पारंपारिक नारी जैसी दोलायमान न होकर अपने उद्येश्य के प्रति दृढ़ है। वह चार दिवारी के बाहर निकल कर अपने आप को स्थापित करने को सक्षम है। इसिलिए तो वे कहती है, आज जानकी सब जान गयी है, वह धरती में नहीं, आकाश में विचरना चाहती है।

Scanned by CamScanner